मिर्जापुर में लगेगा 'पूरब का पहला' यार्न प्रोसेसिंग प्लांट

■ वीरेंद्र दुबे

मिर्जापुर। जिले के लालगंज इलाके में यार्न प्रोसेसिंग प्लांट लगने के बाद पूरब के कालीन निर्यातकों की तमाम दिक्कतें दूर हो जाएंगी। पूर्वांचल के पहले उपक्रम का सबसे बड़ा फायदा यह होगा कि कालीन के ऊन के लिए निर्यातकों को राजस्थान, कश्मीर समेत कई प्रांतों पर निर्भर नहीं होना पड़ेगा। उनकी जरूरत यहीं पूरी हो जाएगी। उन्हें सस्ते में कालीन बुनाई के लिए ऊन मिल जाएगा। इससे कालीन की लागत होगी। दूसरे, भेड़पालकों को अच्छी कीमत मिल जाएगी।

लालगंज में यार्न प्रोसेसिंग प्लांट खुलने की बात से निर्यातकों में उत्साह है। वे मानते हैं कि इससे कालीन बुनाई और निर्यात को संजीवनी मिलेगी। उद्योग विभाग पीपीपी मॉडल पर करीब आठ करोड़ रुपये की लागत से लगाएगा। इसके अप्रैल, 2026 तक तैयार होने की उम्मीद है। इसमें प्रति वर्ष लगभग 50 हजार मीट्रिक टन यार्न का उत्पादन होगा। अमेरिकी टैरिफ से संकट में फंसे कालीन उद्योग को उबरने का पूरा मौका मिलेगा। अमेरिकी टैरिफ के कारण ऊन समेत तमाम मैटेरियल महंगे हो गए हैं। इससे कालीन की लागत बढ़ गई है। बीकानेर (राजस्थान), कश्मीर समेत अन्य प्रांतों के अलावा न्यूजीलैंड और ऑस्ट्रेलिया से भी ऊन मंगाने में भारी खर्च होता है। प्लांट लगने के बाद इन चुनौतियों से निर्यातकों को छुटकारा मिलेगा।

- अमेरिकी टैरिफ से त्रस्त कालीन निर्यातकों की मुश्किलें कम होंगी
- सस्ती ऊन से कालीन निर्माणकी लागत घटेगी, निर्यात में आएगी तेजी
- निर्यातक राजस्थान, कश्मीर और अन्य राज्यों पर निर्भर नहीं रहेंगे

पांच लाख भेड़पालकों को मिलेगा अप्रत्यक्ष रोजगार

मिर्जापुर। लालगंज में यार्न प्रोसेसिंग प्लांट लगने से करीब दो सौ युवाओं को जहां प्रत्यक्ष रोजगार मिलेगा। इसके अलावा पांच लाख से अधिक भेड़पालकों को अप्रत्यक्ष काम मिलेगा। उन्होंने भेड़ का रोआं (ऊन) बेचने के लिए दूर नहीं जाना पड़ेगा। स्थानीय स्तर पर उन्हें बाजार मिलेगा। सीवीओ डॉ. भूपेंद्र पाठक के मुताबिक पूर्वांचल में करीब पांच लाख लोग भेड़ पालन करते हैं। उन्हें अपना उत्पाद राजस्थान और अन्य प्रांतों के प्रोसेसिंग प्लांटों में बेचना पड़ता था। इससे उन्हें मनमाफिक कीमत नहीं मिलती है। ट्रांसपोर्टेशन पर भी उनका बहुत खर्च होता है।

सोनभद्र-वाराणसी कंबल निर्माताओं को लाभ

मिर्जापुर। लालगंज में प्रस्तावित यार्न प्रोसेसिंग प्लांट से मिर्जापुर-भदोही के कालीन निर्यातक ही नहीं बल्कि सोनभद्र और वाराणसी में निजी कंबल कारखाना संचालक भी लाभान्वित होंगे। उन्हें सस्ते दाम पर ऊन मिलेगा। ऊनी कंबल की लागत कम हो जाएगी।

> कालीन निर्यातकों की जरूरतों के मद्देनजर लालगंज में यार्न प्रोसेसिंग प्लांट लगेगा। कालीन निर्यातकों, भेड़पालकों के साथ कंबल निर्माताओं को लाभ होगा। युवाओं को रोजगार मुहैया कराने में मदद मिलेगी।
>
> -वीरेंद्र कुमार, संयुक्त आयुक्त उद्योग विभाग, विंध्याचल मंडल।